SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

# स्वावलंबी नागरिकों के लिए समग्र शिक्षा : नैतिक और व्यावहारिकता का परस्पर संबंध मदन मोहन मालवीय के दृष्टिकोण और नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा पर अध्ययन

*डॉ. कंचन जैन, शिक्षा शास्त्र विभाग, सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान*

*Email : drkanchanjain99@gmail.com*

*शिक्षा एक सुधारात्मक प्रक्रिया है।*

- *डॉ. कंचन जैन*

**सार**

स्वाभाविक नागरिकों के लिए समग्र शिक्षा: नैतिक और व्यावहारिक योगदान का परस्पर संबंध समग्र शिक्षा की अवधारणा, जिसमें संपूर्ण व्यक्ति का बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास शामिल है, सदियों से शैक्षिक दर्शन की आधारशिला रही है। यह एक ऐसा दर्शन है जो मानव अस्तित्व के सभी पहलुओं के परस्पर संबंध को पहचानता है और ऐसे व्यक्तियों को विकसित करने का प्रयास करता है जो न केवल शैक्षिक रूप से कुशल हों बल्कि नैतिक रूप से ईमानदार, सामाजिक रूप से जिम्मेदार और पर्यावरण के प्रति जागरूक भी हों। यह निबंध आत्मनिर्भर नागरिकों को बढ़ावा देने में समग्र शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालता है, महात्मा गांधी के दृष्टिकोण में इसकी जड़ों की जांच करता है और नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के संदर्भ में इसकी समकालीन प्रासंगिकता की जांच करता है। मदन मोहन मालवीय की समग्र शिक्षा की दृष्टि और नई शिक्षा नीति 2020 आत्मनिर्भर नागरिकों के विकास के लिए एक व्यापक रुपरेखा प्रदान करती है। नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा दोनों पर जोर देकर, हम ऐसे व्यक्तियों का निर्माण कर सकते हैं जो न केवल ज्ञानवान हों बल्कि दयालु, नैतिक और कुशल भी हों। यह सुनिश्चित करना अनिवार्य है कि सभी छात्रों को, उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना गुणवत्तापूर्ण समग्र शिक्षा तक पहुँच हो। ऐसा करके, हम एक अधिक न्यायपूर्ण, समतावादी और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

**मुख्यशब्द -** समग्र शिक्षा, व्यवहारिक योगदान, समग्र शिक्षा।

**SHODH PATRA**
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
*ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3*
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

## प्रस्तावना

शिक्षा, सामाजिक प्रगति की आधारशिला है, जिसमें व्यक्तियों और राष्ट्रों को समान रूप से आकार देने की शक्ति है। भारत में, नैतिक और व्यावहारिक दोनों पहलुओं को शामिल करते हुए समग्र शिक्षा की अवधारणा, शैक्षिक प्रवचन में एक आवर्ती विषय रही है। यह निबंध इन दो आयामों के परस्पर संबंधों पर प्रकाश डालता है, जो मदन मोहन मालवीय के दूरदर्शी विचारों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के समकालीन ढांचे से प्रेरणा लेता है। शिक्षा, सामाजिक प्रगति की आधारशिला है, जिसमें व्यक्तियों को जिम्मेदार और उत्पादक नागरिक बनाने की शक्ति है। हाल के वर्षों में, समग्र शिक्षा पर जोर बढ़ रहा है, जो बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से संपूर्ण व्यक्ति के विकास पर केंद्रित है। यह दृष्टिकोण मानता है कि सच्ची शिक्षा शैक्षिक उत्कृष्टता से परे

नैतिक और नैतिक मूल्यों, व्यावहारिक कौशल और किसी की सांस्कृतिक विरासत की गहरी समझ को शामिल करती है।

## मदन मोहन मालवीय के दृष्टिकोण और नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा

महात्मा मदन मोहन मालवीय, एक दूरदर्शी नेता, ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के एक उपकरण के रूप में देखा। उन्होंने चरित्र निर्माण, समाज की सेवा और आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान के साथ पारंपरिक भारतीय मूल्यों के एकीकरण के महत्व पर जोर दिया। उनका शैक्षिक दर्शन भारत में शैक्षिक सुधारों को प्रेरित करता रहता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 शिक्षा के लिए समग्र दृष्टिकोण की वकालत करके मदन मोहन मालवीय के दृष्टिकोण के अनुरूप है। यह आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान कौशल और रचनात्मकता के विकास पर जोर देती है। नीति में भारतीय ज्ञान प्रणालियों, व्यावसायिक शिक्षा और अनुभवात्मक शिक्षा पर भी ध्यान केंद्रित करने का आह्वान किया गया है। इन तत्वों को बढ़ावा देकर, नई शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य आत्मनिर्भर और वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी नागरिक बनाना है।

## मदन मोहन मालवीय का दृष्टिकोण: एक समग्र दृष्टिकोण

महात्मा मदन मोहन मालवीय, भारतीय इतिहास में एक प्रमुख व्यक्ति थे, जिन्होंने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण के लिए एक उपकरण के रूप में देखा था। उन्होंने छात्रों की बौद्धिक और नैतिक दोनों क्षमताओं को पोषित करने वाले समग्र दृष्टिकोण के महत्व पर जोर दिया। मदन मोहन मालवीय का शैक्षिक दर्शन गुरुकुल की भारतीय परंपरा में निहित था, जो शैक्षिक शिक्षा के साथ-साथ चरित्र विकास के महत्व पर जोर देता था।


© Shodh Patra

मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दृष्टिकोण के प्रमुख तत्वों में शामिल हैं:

- **नैतिक शिक्षा:** वे छात्रों में ईमानदारी, निष्ठा और करुणा जैसे मजबूत नैतिक मूल्यों को विकसित करने में विश्वास करते थे। इसे शास्त्रों के अध्ययन, नैतिक शिक्षाओं और योग तथा ध्यान के अभ्यास के माध्यम से प्राप्त किया जाना था।
- **व्यावहारिक शिक्षा:** मदन मोहन मालवीय ने कृषि, हस्तशिल्प और इंजीनियरिंग जैसे व्यावहारिक कौशल की आवश्यकता पर जोर दिया। उनका मानना था कि ऐसे कौशल व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनने और राष्ट्र के आर्थिक विकास में योगदान देने के लिए सशक्त बनाएंगे।
- **भारतीय संस्कृति और विरासत:** उन्होंने भारतीय संस्कृति और विरासत के संरक्षण और संवर्धन की वकालत की। इसमें भारतीय भाषाओं, इतिहास और दर्शन का अध्ययन शामिल था।
- **नई शिक्षा नीति 2020:** एक आधुनिक व्याख्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, भारत की शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण सुधार है, जो मदन मोहन मालवीय के समग्र शिक्षा के दृष्टिकोण के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। इसका उद्देश्य निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करके एक नया भारत बनाना है:
- **बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता**: नीति पढ़ने, लिखने और अंकगणित में मजबूत आधारभूत कौशल के महत्व पर जोर देती है।
- **अनुभवात्मक शिक्षा:** एनईपी अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देता है, जहाँ छात्र व्यावहारिक गतिविधियों, परियोजनाओं और क्षेत्र अवलोकन के माध्यम से सीखते हैं।
- **व्यावसायिक शिक्षा:** नीति छात्रों को नौकरी के बाजार के लिए व्यावहारिक कौशल से वंचित करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहित करती है। नैतिक और नैतिक शिक्षा: यह ईमानदारी, अखंडता और करुणा जैसे मूल्यों सहित नैतिक और नैतिक शिक्षा के महत्व पर जोर देती है।
- **भारतीय ज्ञान प्रणाली:** एनईपी आयुर्वेद, योग और पारंपरिक कला और शिल्प जैसी भारतीय ज्ञान प्रणालियों के अध्ययन को बढ़ावा देती है। नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा का परस्पर संबंध नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा के बीच परस्पर संबंध अच्छी तरह से विकसित व्यक्तियों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। नैतिक शिक्षा नैतिक व्यवहार और सामाजिक जिम्मेदारी के लिए आधार प्रदान करती है। यह व्यक्तियों को सही और गलत की मजबूत समझ विकसित करने में मदद करती है, जिससे वे सूचित निर्णय लेने और ईमानदारी से कार्य करने में सक्षम होते हैं।

दूसरी ओर, व्यावहारिक शिक्षा व्यक्तियों को वास्तविक दुनिया में सफल होने के लिए कौशल और ज्ञान से वंचित करती है। यह उन्हें समस्या समाधान क्षमताओं, रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच कौशल


© Shodh Patra

विकसित करने में मदद करती है। नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा को मिलाकर, हम ऐसे व्यक्तियों का निर्माण कर सकते हैं जो न केवल ज्ञानवान हों, बल्कि दयालु, नैतिक और कुशल भी हो।

**वंचित समुदाय और समग्र शिक्षा**

भारत में आज भी वंचित समुदाय, जैसे कि निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले, अक्सर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँचने में महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करते हैं। समग्र शिक्षा इन समुदायों को इन बाधाओं को दूर करने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा दोनों पर ध्यान केंद्रित करके, हम हाशिए पर पड़े समुदायों को जीवन में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल और मूल्य विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

**नैतिक और व्यावहारिक योगदान का परस्पर संबंध**

1. एक समग्र शिक्षा प्रणाली को नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा के बीच संतुलन बनाना चाहिए। नैतिक शिक्षा ईमानदारी, अखंडता, सहानुभूति और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों को स्थापित करती है। यह व्यक्तियों को एक मजबूत नैतिक दिशा विकसित करने और नैतिक विकल्प बनाने में मदद करती है। दूसरी ओर, व्यावहारिक शिक्षा व्यक्तियों को कार्यस्थल में सफल होने और समाज में योगदान देने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से वंचित करती है। यह रचनात्मकता, नवाचार और वास्तविक दुनिया की समस्याओं पर जान को लागू करने की क्षमता को बढ़ावा देती है।

2. आत्मनिर्भर नागरिकों के विकास के लिए नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा का एकीकरण महत्वपूर्ण है। नैतिक मूल्य नैतिक निर्णय लेने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं, जबकि व्यावहारिक कौशल व्यक्तियों को आजीविका कमाने और अर्थव्यवस्था में योगदान करने में सक्षम बनाते हैं। जब इन दोनों पहलुओं को मिला दिया जाता है, तो व्यक्ति पूर्ण और उत्पादक जीवन जीने के लिए सशक्त होते हैं।

3. वंचित समुदाय समग्र शिक्षा प्राप्त करने में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक सभी के लिए समान पहुँच सुनिश्चित करना है, विशेष रूप से हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए। इन समुदायों को अक्सर गरीबी, भेदभाव और बुनियादी ढांचे की कमी जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, हाशिए पर पड़े समूहों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पर्याप्त संसाधन और सहायक शिक्षण वातावरण प्रदान करना आवश्यक है।

महात्मा गांधी दवारा परिकल्पित और नई शिक्षा नीति 2020 में सन्निहित समग्र शिक्षा, आत्मनिर्भर नागरिकों के विकास के लिए आवश्यक है। संपूर्ण व्यक्ति को बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से पोषित करके शिक्षा व्यक्तियों को पूर्ण जीवन जीने और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए

सशक्त बना सकती है। समग्र शिक्षा को प्राथमिकता देना और सभी के लिए समान पहुँच सुनिश्चित करना अनिवार्य है, विशेष रूप से हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए। ऐसा करके, हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्जवल भविष्य बना सकते हैं।

नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, भारत की शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण सुधार है, जो समग्र शिक्षा के सिद्धांतों के अनुरूप है। इसका उद्देश्य छात्र-केंद्रित, लचीली और बहू-विषयक शिक्षा प्रणाली बनाना है जो आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान और रचनात्मकता पर ध्यान केंद्रित करती है। एनईपी पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा, कला और खेल को एकीकृत करने पर जोर देती है, जिससे छात्रों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा मिलता है।

## वंचित समुदायों के लिए चुनौतियाँ

वंचित समुदायों, जिनमें वंचित सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, ग्रामीण क्षेत्र और अल्पसंख्यक समूह शामिल है, को समग्र शिक्षा तक पहुँचने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों में शामिल हैं:

- **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच की कमी:** गुणवत्तापूर्ण स्कूलों, योग्य शिक्षकों और शैक्षिक संसाधनों तक सीमित पहुँच हाशिये पर पड़े छात्रों के समग्र विकास में बाधा डालती है।
- **सामाजिक-आर्थिक बाधाएँ:** गरीबी, जागरूकता की कमी और सांस्कृतिक बाधाएँ वंचित समुदाय के बालकों को दाखिला लेने और अपनी शिक्षा पूरी करने से रोक सकती हैं।
- **लैंगिक भेदभाव:** वंचित समुदायों की लड़कियों और महिलाओं को अक्सर भेदभाव और शिक्षा में सीमित अवसरों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी असुविधा और बढ़ जाती है। भारत अपने नागरिकों की पूरी क्षमता का एहसास कर सकता है और एक मजबूत, न्यायसंगत और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण कर सकता है।

## मदन मोहन मालवीय के दृष्टिकोण में शिक्षा

महात्मा गांधी, एक प्रखर विचारक और समाज सुधारक, ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा। उन्होंने नैतिक और आध्यात्मिक विकास के साथ बौद्धिकविकास को संतुलित करने के महत्व पर जोर दिया। गांधी का मानना था कि शिक्षा को व्यक्तियों को पूर्ण जीवन जीने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से वंचित करना चाहिए, साथ ही उनके मूल्यों और नैतिकता का पोषण भी करना चाहिए। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की वकालत की जो आत्मनिर्भर व्यक्तियों का निर्माण करे जो समाज में सार्थक योगदान दे सकें।

### नई शिक्षा नीति 2020 और समग्र शिक्षा

नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, भारत में शिक्षा के लिए एक व्यापक रूपरेखा है, जो गांधी के समग्र शिक्षा के दृष्टिकोण के अनुरूप है। यह संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए संपूर्ण बच्चे के विकास पर जोर देती है। नीति अनुभवात्मक शिक्षा, आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल को बढ़ावा देती है, जो सभी आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक हैं।

### नैतिक और व्यावहारिक योगदान का परस्पर संबंध

1. एक समग्र शिक्षा प्रणाली को नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा के बीच संतुलन बनाना चाहिए। नैतिक शिक्षा ईमानदारी, अखंडता, सहानुभूति और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों को स्थापित करती है। यह व्यक्तियों को एक मजबूत नैतिक दिशा विकसित करने और नैतिक विकल्प बनाने में मदद करती है। दूसरी ओर, व्यावहारिक शिक्षा व्यक्तियों को कार्यस्थल में सफल होने और समाज में योगदान देने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से वंचित करती है। यह रचनात्मकता, नवाचार और वास्तविक दुनिया की समस्याओं पर जान को लागू करने की क्षमता को बढ़ावा देती है।

2. आत्मनिर्भर नागरिकों के विकास के लिए नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा का एकीकरण महत्वपूर्ण है। नैतिक मूल्य नैतिक निर्णय लेने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं, जबकि व्यावहारिक कौशल व्यक्तियों को आजीविका कमाने और अर्थव्यवस्था में योगदान करने में सक्षम बनाते हैं। जब इन दोनों पहलुओं को मिला दिया जाता है, तो व्यक्ति पूर्ण और उत्पादक जीवन जीने के लिए सशक्त होते हैं।

3. वंचित समुदाय समग्र शिक्षा प्राप्त करने में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक सभी के लिए समान पहुँच सुनिश्चित करना है, विशेष रूप से हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए। इन समुदायों को अक्सर गरीबी, भेदभाव और बुनियादी ढांचे की कमी जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, हाशिए पर पड़े समूहों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पर्याप्त संसाधन और सहायक शिक्षण वातावरण प्रदान करना आवश्यक है।

### निष्कर्ष

महात्मा गांधी दवारा परिकल्पित और नई शिक्षा नीति 2020 में सन्निहित समग्र शिक्षा, आत्मनिर्भर नागरिकों के विकास के लिए आवश्यक है। संपूर्ण व्यक्ति को बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से पोषित करके शिक्षा व्यक्तियों को पूर्ण जीवन जीने और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए सशक्त बना सकती है। समग्र शिक्षा को प्राथमिकता देना और सभी के लिए समान पहुँच सुनिश्चित करना

अनिवार्य है, विशेष रूप से हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए। ऐसा करके, हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्जवल भविष्य बना सकते हैं।

नैतिक, बौद्धिक और व्यावहारिक विकास पर जोर देने वाली समग्र शिक्षा आत्मनिर्भर नागरिक बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। यह व्यक्तियों को आलोचनात्मक रूप से सोचने, समस्याओं को हल करने और समाज में सार्थक योगदान देने में सक्षम बनाती है। जबकि चुनौतियाँ बनी हुई हैं, खासकर हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए, महात्मा गांधी द्वारा परिकल्पित और नई शिक्षा नीति 2020 में सन्निहित समग्र शिक्षा प्रणाली की दृष्टि एक उज्जवल भविष्य की आशा प्रदान करती है।

## संदर्भ


- Rao, P. Rajeswar (1991). The Great Indian patriots, Volume 1. Mittal Publications. पपृ० 10-13. आई-ऍस.बी.एन. 81-7099-280-X. मूल से 3 नवंबर 2012 को पूरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2012.
- Our Leaders (Volume 9 of Remembering Our Leaders): Madan Mohan Malaviya. Children's Book Trust. 1989. पपृ. 53-73. आई-ऍस.बी.एन. 81-7011-842-5. मूल से 3 नवंबर 2012 को पूरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2012.



© Shodh Patra